वास्तु में ब्रह्मस्थान का महत्व

वास्तु शास्त्र में ब्रह्मस्थान एक खास मार्गदर्शक सिद्धांत है और आर्किटेक्ट के डिजाइन के लिए प्रारंभ बिंदू है। इसे पवित्र स्थान माना जाता है। किसी भवन या खाली पड़े प्लॉट का विशेष मध्य क्षेत्र ब्रह्मस्थान होता है। यह घर का केन्द्र, सबसे पवित्र और शक्तिशाली स्थल है। घर की सारी दिशायें ब्रह्मस्थान पर आकर मिलती हैं और यही से सारी दिशाओं में सकारात्मक ऊर्जा का प्रवाह होता है, जो उस स्थान में रहने वालों के लिए अत्यंत आवश्यक है। लंबे समय तक समृद्धि, प्रगति और खुशियों के लिए घर के ब्रह्मस्थान को खुला होना चाहिए और यहां कोई बाधा नहीं होनी चाहिए। सर्वश्रेष्ठ स्थिति वह है जब यह स्थान आसमान की और खुला रहे ताकि वास्तु शास्त्र के अनुसार ब्रह्मांडीय ऊर्जा से ब्रह्मस्थान का संपर्क सतत बना रहे। गांवों में पुराने घरों में जो आंगन होता था या मंदिरों में जो आंगन होता है, वह बिलकुल खुला होता है। वहां कोई निर्माण कार्य नहीं किया जाता ताकि पवित्र और शक्तिशाली ब्रह्मस्थान बन सके। फैक्ट्री और उद्योग के लिए भी ब्रह्मस्थान बहुत महत्वपूर्ण है। यह ऊर्जा का वह केन्द्र है जो हर दिशा में सकारात्मक ऊर्जा प्रवाहित करता है।

भवन निर्माण में इस बात का ध्यान रखा जाना चाहिए कि ब्रह्मस्थान पर खंभा, सीढ़ी, शौचालय, रसोई या कोई अन्य भारी चीज न हो। अगर ब्रह्मस्थान पर किसी प्रकार का कोई निर्माण कार्य किया गया हो या कोई भारी चीज रखी हो, तो इसे गंभीर वास्तु दोष माना जाता है। फैक्ट्री में भी ब्रह्मस्थान पर कोई भारी मशीन या सामान

नहीं रखना चाहिए। इसके कारण उत्पादन में कमी और डेड स्टॉक में वृद्धि हो सकती है। ब्रह्मस्थान के संबंध में डिजाइन के सिद्धांत इस प्रकार है :

1. ब्रह्मस्थान पर शौचालय या बाथरूम रहने से परिवार के सदस्य बीमार पड़ सकते हैं।

2 यहां अगर रसोईघर हो तो प्रगति धीमी होती है और परिवार के सदस्य अक्सर बीमार रहते हैं।

3. यहां सीढ़ी होने से परिवार के मुखिया को भारी मानसिक तनाव और आर्थिक बोझ का सामना करना पड़ता है।

4. यहां पर अगर खंभा हो तो आपके प्रयास सही दिशा में नहीं होंगे।

5. यहां पर अगर बेडरूम हो तो नींद में बाधा आती है।

घर, फैक्ट्री या कॉमर्सियल भवन बनाते समय ब्रह्मस्थान को खुला छोड़ा जा सकता है ताकि यह सतत आसमानी ऊर्जाओं के संपर्क में रहे और पर्याप्त सकारात्मक ऊर्जा आकृष्ट करता रहे। ऐसा सही आकार के पर्याप्त पिरामीडों से भी किया जा सकता है। ब्रह्मस्थान की शक्ति को बढ़ा देने से यह पूरे घर, भवन या प्लॉट के कई छोटे-मोटे वास्तु दोषों को दूर कर देता है। अगर आपने अपने घर के ब्रह्मस्थान पर ध्यान दिया है, तो घर के 90 प्रतिशत वास्तु दोष दूर हो जाते है।

वर्गाकार फ्लैट में ब्रह्मस्थान का पता लगाना बहुत आसान है, लेकिन अनियमित आकार के भवनों और प्लॉट में ब्रह्मस्थान का पता लगाना विशेषज्ञों का काम हो जाता है। इस स्थिति मे ऐसा करना पड़ता है कि मानों प्लॉट को कई भागों में बांटा जा रहा है और हर टुकड़े के ब्रह्मस्थान को पिरामीड के माध्यम से शक्तिशाली किया जाता है। ऐसी हालत में जब कोई भवन बन चुका है और ब्रह्मस्थान में भी निर्माण कार्य हो चुका है या यहां भारी वस्तुओं का अंबार लगा है, छिपे हुए ब्रह्मस्थान का पता लगाकर पिरामीडों के माध्यम से उसे भी शक्तिशाली किया जा सकता है।

आमतौर पर बताया जाता है कि ब्रह्मस्थान पर रंग रफेद होना चाहिए। फ्लैट में तो बेहतर यह होगा कि ब्रह्मस्थान पर अलग रंग के टाइल्स लगाये जायें ताकि ब्रह्मस्थान की पवित्रता बनी रहे। कायदे से यह काम उसी समय होना चाहिए जब डिजाइन बनाया जा रहा हो ताकि बाद में दोष सुधार की जरूरत न पड़े। घर, फैक्ट्री, कॉमर्सियल भवनों या खाली प्लाट में ब्रह्मस्थान का पता लगाने के लिए जरूरी है कि किसी विशेषज्ञ से सलाह ली जाये ताकि ब्रह्मस्थान का ब्रह्मांडीय दैवीय संपर्क स्थापित हो सके।

लेखक इंजीनियर हैं और सार्वजनिक क्षेत्र के उपक्रम में उच्चाधिकारी रह चुके हैं। फिलहाल वे भूदोष वास्तु सलाहकार के रूप में हैदराबाद मे रह रहे हैं। उनसे ूणंतउपबअेंजनण्बवउ या उनके मोबाइल नम्बर 099893-00733 पर संपर्क किया जा सकता है।